एक नई मेनका

(एकल नाटक)

विभा रानी

एक नई मेनका

(एकल नाटक)

विभा रानी

प्रकाशक: नॉटनल

प्रकाशन: नवंबर, 2024

© विभा रानी

एक नई मेनका

विधा :	एकल नाटक
कहानी :	रमणिका गुप्ता
नाट्य रूपांतर व प्रस्तुति :	विभा रानी
निर्देशन :	बॉम्बे कण्णन
संगीत :	बॉम्बे कण्णन/ विभा रानी
नृत्य संयोजन :	राधामणि
संगीत संचालन :	हेमंत झा
मंच संचालन :	चंदन झा
अवधि :	60 मिनट

हम सब हैं 'एक नई मेनका'

'एक नई मेनका' हिंदी की सुप्रसिद्ध लेखक रमणिका गुप्ता की कहानी का नाट्य स्वरूप है। 2011 की बात है। रमणिका जी ने कहीं से मेरे एकल नाटक 'मैं कृष्णा कृष्ण की' के बाबत सुना और मुझसे अपनी इस कहानी के नाट्य रूपांतर की इच्छा ज़ाहिर की। मैं तब चेन्नै में थी, जहां से हिंदी नाटक करना नाको चने चबाने जैसा था। फिर भी मुझे संयोग और सौभाग्य से तमिल के सुप्रसिद्ध रंगकर्मी बॉम्बे कण्णन मिल गए थे। उन्होंने ही 'मैं कृष्णा कृष्ण की' एकल नाटक का निर्देशन भी किया था। कला, साहित्य व संस्कृति को समर्पित बॉम्बे कण्णन तमिल टेलिविजन व थिएटर निर्देशक हैं। तमिल लोक और क्लासिक साहित्य में गहरी रुचि के कारण वे तमिल क्लासिक को ऑडियो- विजुअल रूप में लेकर लाए हैं। बॉम्बे कण्णन से मिलने के बाद हमारे नाटक की गाड़ी आगे को बढ़ चली थी। लिहाज़ा 'एक नई मेनका' का भी उन्होंने निर्देशन किया। संगीत हम दोनों ने मिलकर तैयार किया। इस नाटक को करने के लिए मैंने भरतनाट्यम सीखा गुरु राधामणि से। उन्होंने इसके लिए नृत्य संयोजन का काम किया।

यह नाटक भारतीय मिथक से अलग आज के स्वरूप पर प्रकाश डालता है। भारतीय मिथक के अनुसार देवराज इंद्र ऋषि विश्वामित्र का तप भंग करने के लिए मेनका को धरती पर जाने का आदेश देते हैं। मेनका जाती तो है, लेकिन एक ओर वह धरती को आज की

तथाकथित मेनकाओं से पटी पड़ी देख भौंचक है तो दूसरी ओर वह पाती है अपने अस्तित्व के लिए संघर्षरत स्त्रियों को, जो अपने साथ हो रहे भेदभाव के विरुद्ध और अपनी अस्मिता की पहचान के लिए संघर्ष कर रही हैं। मेनका विश्वामित्र से मिलती है। लेकिन, विश्वामित्र की जन कल्याणकारी बातें सुन और समझकर वह विश्वामित्र का तप भंग करने से इंकार कर देती है। वह इंद्रलोक भी नहीं लौटती, बल्कि अपनी आवाज को वह अपनी अस्मिता के लिए संघर्ष कर रही धरती की स्त्रियों के साथ मिला देती है। यह आज की नई मेनका है- आज की स्त्रियों के प्रतिरोध और मुक्ति का स्वर, जो अपने समाज के तथाकथित ढकोसलों से मुक्त होते हुए अपना जीवन संवारना चाहती है, साथ ही अपने को भोग की वस्तु माने जाने से इंकार करती है।

इस कथा को नाट्य रूपांतरित करना भी अपने आप में बहुत मुश्किल था। कथा मे इतने सघन भाव और रेफरेंसेज थे कि सभी का समावेश मुश्किल था। मेनका और आज की मेनका के बीच बडी तेज़ी से इधर से उधर हो रही थी। मैं इसे पकड़ना चाह रही थी। चूंकि मैं नाटकों में मनोविज्ञान का इस्तेमाल अधिक करती हूं, इसलिए, इस कथा को भाव के स्वरूप पर लेकर आई।

2011 में साहित्य अकादमी के सभागार में 'एक नई मेनका' का मंचन हुआ- जेनरल लाइट व मंच की साज- सज्जा से विहीन। शायद यहीं से मेरे रूम थिएटर की अवधारणा सुगबुगाने लगी थी। दर्शकों के प्रतिसाद से यह विश्वास हो गया कि नाटक का कंटेंट, निर्देशन

और अभिनय अगर दमदार है तो नाटक चल निकलता है, बिना किसी अतिरिक्त तामझाम के। 2012 में दिल्ली के बेला थिएटर ने अपने 'टेरेस थिएटर फेस्टिवल' में इसका मंचन करवाया, जिसे देखने रमणिका जी स्वयं भी आई थीं। एक बार फिर से इस नाटक को देखने का मौका उन्हें मिला था। उसके बाद इस नाटक के मंचन इंदौर, खंडवा, उज्जैन, पॉण्डिचेरी आदि जगहों पर हुए। पुस्तक रूप में अब यह एकल नाटक 'एक नई मेनका' आपके सामने है। पढिए, अपनी राय दीजिए। इस नाटक को करने व कराने व इस नाटक के भावों को समझने के इच्छुक मुझसे सम्पर्क कर सकते हैं।

विभा रानी